Notes

होता है। और जनवरो के ज्ञान का क्षेत्र सीमित होता है।

2. ज्ञान का सम्बन्ध ज्ञाता से होता है। ज्ञान का सम्बन्ध सदैव ज्ञाता से होता है। ज्ञाता के अभाव मे ज्ञान का कोई महत्व नही होता संसार में अनेक प्रकार की वस्तुए होती है। जिसके महत्वपूर्ण स्थान जैसे - मानव चन्द्रमा के बारे में बस इतना ही जानता है। कि यह उपग्रह है। ज्ञान जो एक देवता के रूप में जाना जाता है।

जब मानव चन्द्रमा पर पहुच गये उसने यह ज्ञात किया कि सुखी नदी पहाड तथा चट्टाने आदि है। इस सबका वर्णन पृथ्वी पर आकर बताया तो समस्त पृथ्वी वासियो को ज्ञान हुआ

3- ज्ञान का सम्बन्ध कौशल विशेष से :- किसी क्षेत्र विशेष तथा कौशल विशेष का ज्ञान व्यक्ति को उस क्षेत्र का विशेषज्ञ कहलायेगा। जैसे एक व्यक्ति कृषि के बारे में जानता है तो कृषि विशेषज्ञ कहलायेगा, पशुओं का चिकित्सक पशुओं का उपचार कर सकता है। मानव का चिकित्सक मानव का उपचार कर सकता है।

4- ज्ञान एक अमूर्त वस्तु है। - ज्ञान को अमूर्त वस्तु के रूप में स्वीकार किया जाता है। ज्ञान को किसी व्यक्ति के द्वारा नही देखा जा सकता जिस प्रकार संसार की अन्य वस्तुओं को देखते है। जैसे - गाय भैस, बकरी आदि जानवरो को प्रत्यक्ष रूप से देख सकते है। ज्ञान एक निराय वस्तु है। जिसको अनुभव किया जा सकता है। जैसे मिठाई खाने के बाद मीठापन का अनुभव किया जा सकता है।

Notes

5:- ज्ञान एक मानसिक प्रक्रिया है:- ज्ञान का सम्बन्ध पूर्ण मानसिक अवस्था से होती है मानव द्वारा अनुभव तथा संवेदनाओं का सम्बन्ध ज्ञान से होता है। जैसे जेम्सवाट ने एक चाय की केतली को देखा उसका ढक्कन भाप की शक्ति से उठता और गिरता है। उसने अपनी क्रियाओं को स्वीकार कर लिया की भाप में शक्ति है। तब उन्होंने भाप को मापने के ~~उसके~~ लिए उसने (केतली) ढक्कन के ~~ऊपर~~ ऊपर एक पत्थर का टुकड़ा रख दिया जिससे भाप में इतनी शक्ति है उस केतली के ढक्कन को उठाने गिराने लगा शक्ति को भाप की सीमा के साथ घटाया बढ़ाया जा सकता है

जेम्सवाट द्वारा इंजन की खोज करने से सम्पूर्ण प्रक्रिया में मानसिक विचारों का विशेष योगदान रहा उसे मानसिक क्रिया कहते हैं

6:- ज्ञान के विषय आवश्यक है। ज्ञान को प्राप्त करने के प्रक्रिया उस अवस्था में पूर्ण होती है। जब उसके लिए उस विषय की उपलब्धि हो।

जैसे ईश्वरचन्द विद्यासागर गणित विषय के विद्यार्थी थे उस विषय में जितना महत्व ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से है उससे उतना अधिक उस विषय से है। क्योंकि गणित विषय के अभाव में ईश्वरचन्द्र को ज्ञाता नहीं माना गया बल्कि गणित विषय ही ईश्वरचन्द विद्यासागर को ज्ञाता माना इस लिए भी विषय भी बहुत आवश्यक है।

Notes

7- ज्ञाता का घटना से सम्पर्क :- ज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि ज्ञाता उस घटना या परिस्थिति के सम्पर्क में हो सम्पर्क के अभाव में ही ज्ञान नही हो सकता

जैसे किसी बालक को ताजमहल के बारे में पूछा जा यह कहा और कैसा है। इसके बारे में पूर्ण जानकारी के लिए ताजमहल के सम्पर्क में होना आवश्यक है। यह सम्पर्क प्रत्यक्ष रूप से हो सकता है। या किसी माध्यम से हो सकता है। बालक को ताज महल के पास लेकर जाया जा सकता तथा उसको मौखिक रूप से चित्रो के माध्यम से बताया जा सकता है तथा बालक को ताजमहल के बारे में परिचय कराया जा सकता है।

8- ज्ञान परिवर्तन शील है- ज्ञान के समय यह आवश्यक है। बालक के परिस्थिति के अनुसार जैसा ज्ञान दिया जाता है। बालक के अन्दर जैसा वैसा ही परिवर्तन आता है। शिक्षक अपने व्याख्यान के माध्यम से छात्रो को परिवर्तन शील करता है। प्रत्येक शिक्षाशास्त्री बाल केन्द्रित शिक्षा के विषय ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। तथा व्याख्यान विधि के स्थान पर बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों का विकास होता है।

जैसे प्रायोजना विधि तथा समस्या समाधान विधि आदि इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि ज्ञान भी समय के अनुसार ~~परिवर्तन~~ परिवर्तित होता है।

9- ज्ञान परिस्थिति जन्य है :- अनेक परिस्थितियो में ज्ञान परिस्थिति जन्य होते है। अनेक परिस्थितियों का रूप भिन्न रूप में प्रकट होता है।

Notes

ज्ञान की आवश्यकता एवं महत्व :- ज्ञान की शिक्षा में प्रमुख रूप से आवश्यक होती है। ज्ञान के अभाव बालकों का विकास अवरुद्ध हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है एक शिक्षक द्वारा सम्पूर्ण ज्ञान से ज्ञान की अवधारणा को समझकर छात्रों को शैक्षिक विकास के उद्देश्य को प्राप्त करके अपनी भूमिका का निर्वाहन करना चाहिए

1- **चरित्र के विकास के लिए :-** चरित्र के विकास के मनुष्य को यह आवश्यक है कि छात्रों के विभिन्न प्रकार के तथ्यात्मक एवं परिचयात्मक ज्ञान से परिचय कराया जाय। छात्रों को विभिन्न प्रकार के नैतिक शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन कराया जाय

2- **व्यावसायिक विकास के लिए :-** व्यवसायिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक द्वारा छात्रों को कौशलात्मक ज्ञान प्रदान किया जाय

जैसे- छात्र को अपने जीवन यापन के लिए विभिन्न प्रकार के व्यवसायों का चयन करना पड़ता है। इस व्यवसाय के आधार पर छात्रों में व्यवसाय से सम्बन्धित कौशलों का विकास करना आवश्यक है।

3- **रोजगार के लिए :-** विद्यालय में छात्रों के अध्ययन का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ अपने रोजगारों के लिए तैयार करना पड़ता है। रोजगार के लिए कौशलात्मक ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विभिन्न प्रकार के

Notes

ज्ञान प्राप्त करने से विभिन्न प्रकार की के रोजगार प्राप्त कर सकते है।

4- उच्च जीवन स्तर के लिए :- विभिन्न प्रकार के ~~संख्यात्मक~~ तथ्यात्मक एवं कौशलात्मक ज्ञान के माध्यम से छात्रो का जीवन उच्च स्तर तक होता है।

जैसे- एक व्यक्ति यदि कोई रोजगार करना शुरू कर दिया उससे सम्बन्धित जो कौशल प्राप्त होता है। ~~वह~~ उससे छात्र अपना जीवन यापन कर सकता है।

5- शारीरिक विकास के लिए :- शारीरिक विकास के यह आवश्यक है कि छात्र के विभिन्न प्रकार के लिए कौशलो का विकास किया जाए विद्यालय में विभिन्न प्रकार के खेलो का आयोजन किया जाए। और उससे सम्बन्धित शारीरिक क्रियाओ का आयोजन किया जाय। ज्ञान के माध्यम से शिक्षक यह जान जाता है। कि प्राथमिक स्तर पर शारीरिक विकास के किन- किन खेलो को विद्यालय व्यवस्था में स्थान मिलना चाहिए।

6- सांस्कृतिक विकास के लिए :- सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य छात्रो के द्वारा ज्ञान के माध्यम से ही होता है जिसमे छात्र परिचालात्मक ज्ञान का सहारा लेता है। विद्यालय में होने वाले विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम मे ~~सहभागीता~~ सहभागिता होती है। कुछ छात्र प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते है। तथा कुछ छात्रो के द्वारा इन कार्यक्रमों को भी देखा जाता हैं।